حقيقة التوح

الشيخ
صالح الفوزا

ترجمة
عزيز الحق عم

هندي

एकेश्वरवाद का तथ्य

संकलन
डा० सालेह अलफौजान

अनुवाद
अजीजुल हक उमरी(एम०ए०) असरारुल हक (बी०ए०)

प्रकाशक
मकतब तौइयतुल जालियात नसीम
टेलीफून न०. 2328226—2350194—2350195
फैक्स न०—2301465 पोस्ट—बौक्स न०— 51584
रियाध — 11553 (सऊदी अरब)

एकेश्वरवाद का तथ्य

संकलन

डा० सालेह फ़ौज़ान

अनुवाद

अज़ीज़ुल हक़ उमरी (एम०ए०)

असरारुल हक़ (बी०ए०)

حقيقة التوحيد

للدكتور صالح الفوزان

المترجمان

عزيزل اخ

انزارل اخ

विषय-सूची

प्रक्कथन

द्वारा - माननीय डा० अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुल मुहसिन तुर्की ।

कुलपति इमाम मुहम्मद पु० सऊद इस्लामिक विश्वविद्यालय ।

मुस्लिम क्षेत्र के कुछ निवासियों की मूर्खता एवं संकीर्णता के कारण विनाशकारी समुदाय विद्यमान हैं जिनके खतरे से सभी अवगत हैं । ईश्वर की दया से यद्यपि ऐसे तत्व थोड़े ही हैं, तथापि इनके द्वारा गलत विश्वासों का प्रचार-प्रसार होता है, जो इस्लाम के प्रचार एवं मुसलमानों के लिये अति हानिकर हैं । इसलिये, सभी मुसलमानों का कर्त्तव्य है कि इनका विरोध करें और इनके दुराचारों तथा मिथ्या विश्वासों का खन्डन करें, तथा इनके ईश्वर एवं ईशदूत के आदेशों के विपरीत होने पर प्रकाश डालें ।

यह अति आवश्यक है कि दूषित विश्वासों तथा गलत तत्वों का अनावरण किया जाये जिनको राक्षस ने अन्धा कर दिया है तथा उनके दुराचारों को उनके लिये सुन्दर बना रखा है, जिन्होंने सत्य को त्यागने के लिये अनेक बहाने बना रखे हैं । इसी के साथ सत्य का वर्णन तथा इस्लाम धर्म से सम्बन्धित विषयों को प्रस्तुत किया जाय और उसके विश्वासों एवं मान्यताओं को स्पष्ट किया जाये ।

जब से इस्लाम में यहूदीयों तथा पाखंडियों के हाथों दुराचारी तत्व पैदा हुये हैं जो इस्लाम के स्वरूप को बिगाड़ने के लिये घुसे उसी समय से अल्लाह उनका खन्डन करने के-लिये ऐसे सदाचारियों को पैदा करता रहा है जो इस्लाम के स्वरूप की रक्षा कर रहे हैं । और इस्लाम विरोधी तत्वों तथा उनके दूषित विचारों का खन्डन करते आ रहे हैं ।

अल्लाह की कृपा से इस्लामिक विश्वविद्यालयों में विशेष रूप से इमाम मुहम्मद बिन सऊद इस्लामिक विश्वविद्यालय में ऐसे विद्वान मौजूद हैं जो सदाचारी धार्मिक पूर्वजों के धर्म एवं इस्लाम धर्म के जानकार हैं तथा लोगों के लिये पूर्णतः इसकी व्याख्या कर सकते हैं एवं अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद करने की योग्यता रखते हैं ताकि यह परिपत्र विश्व के कोने-कोने में मुसलमानों तक पहुंचे और वह इससे अवगत हों । इस पर अटल रहते हुये दूषित विचारों तथा धर्मों से बच सकें।

शेख सालेह पुत्र फ़ौज़ान ने एकेश्वरवाद की वास्तविकता के विषय में जिसे सभी ईशदूत लाये और इससे सम्बन्धित संदेहों के संदर्भ में जो कुछ लिखा है वह हमारे विश्वविद्यालय की ओर से प्रयासों का प्रारंभ है । हम अल्लाह से आशा करते है कि वह इन प्रयासों को सफल करेगा जिसका उद्देश्य यह है कि इस्लाम की मूल मान्यताओं एवं विधि

विधानों को प्रकाशित किया जाये तथा यह निर्णय लिया गया है कि "समार्ग" के नाम से अन्य सरल एवं संक्षिप्त पुस्तिकायें प्रकाशित की जायें।

लेखक महोदय ने अपनी इस लाभ प्रद पुस्तिका में आस्था के महत्त्व के वर्णन पर विशेष रूप से ध्यान दिया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि आस्था इस्लाम धर्म की आधार शीला है। उन्होंने एकेश्वर के सभी रूपों तथा नास्तिकों के विचारों की सविस्तार व्याख्या की है और यह बतलाया है कि किस प्रकार पूर्व धार्मिक गण पूजा उपासना में अद्वैत से द्वैत में लिप्त हो गये और अपने दूषित विचारों को सत्य का रूप देने के लिये क्या-क्या शंकायें उत्पन्न किये तथा वर्तमान धार्मिक समुदायों में उनकी कौन-कौन सी बातें पाई जाती हैं, फिर उनके दूषित विचारों एवं शंकाओं का विस्तृत रूप से खन्डन किया है, और धर्मशास्त्र एवं ईश दूत के वचनों से उनके मिथ्या विचारों एवं तर्कों का रद्द किया है।

इसके अतिरिक्त लेखक ने शिफ़ाअत (दोष मुक्ति-याचना) तथा उस में जो स्वीकार की जायेंगी और जो स्वीकार नहीं की जायेंगी सभी शर्तों की विस्तार पूर्वक व्याख्या की है। इसी प्रकार लेखक ने सदाचारियों एवं नेकों से दुआ लेने के विषय पर भी संतोष जनक चर्चा की है।

वसीला अर्थात अल्लाह की पूजा एवं उससे विनय के लिये वैध तथा अवैध माध्यम क्या है इसका भी विस्तृत रूप से उल्लेख किया है।

इस पुस्तिका का समापन श्रीमान ने उन लोगों के मिथ्या विचारों के खन्डन से किया है जो कहानियों तथा सपनों पर विश्वास करते हैं और समाधियों पर अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिये जाते हैं। अल्लाह (परमेश्वर) उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे और इस प्रयास को लाभ प्रद बनाये तथा हम सबके संकल्प को पूरा करे। वही संमार्ग दर्शक तथा हमारा सहायक है। वही सर्वोत्तम सहायक है।

डा० अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुल मुहसिन तुर्की
कुलपति इमाम मुहम्मद पु० सऊद इस्लामिक विश्वविद्यालय

एकेश्वर वाद का वर्णन

जिसे सभी ईशदूत लाये और उसके संदर्भ में संदेहों का निवारण

सभी प्रशंसा अल्लाह के लिये है जो सब लोक का पोषक है तथा अल्लाह की दया एवं शान्ति हमारे ईशदूत, मुहम्मद अन्तिम ईशदूत, पर और उस पर जितने आपके वचनों को ग्रहण किया तथा आपके मार्ग पर चले, अन्त दिवस तक हो।

तत्पश्चात विश्वास ही धर्म का आधार है जिस पर धार्मिक समूहों के भवन की स्थापना होती है, तथा प्रत्येक समुदाय की प्रगति एवं बड़ाई उसके सत्य विश्वासों एवं स्वस्थ विचारों पर निर्भर करती है। यही कारण है कि ईशदूतों ने विश्वासों के सुधार पर बल दिया और प्रत्येक ईशदूत ने अपने संदेश का प्रारंभ इस प्रकार किया।

"अल्लाह की उपासना करो जिससे अन्य कोई दूसरा पूज्य नहीं।" (कुर्आन सू०, ७ आ०-५९)

"हमने प्रत्येक जन समूह में ईशदूत भेजे कि अल्लाह की पूजा करो तथा राक्षस से बचो।" (कुर्आन सूरह १६, आयत-३६)

जिसका कारण यह है।

मैंनें दानव तथा मानव को मात्र अपनी पूजा के लिये उत्पन्न किया है। अल्लाह का अपने भक्तों पर उसकी पूजा करने का अधिकार है जैसा कि अन्तिम ईशदूत ने अपने साथी मुआज़ पुत्र जबल से प्रश्न किया कि:- 'क्या तुम जानते हो कि अपने भक्तों पर अल्लाह का क्या अधिकार है और अपने भक्तों के प्रति अल्लाह का दायित्व क्या है ?' फिर कहा कि अल्लाह के प्रति भक्तों का दायित्व यह है कि उसी की पूजा करें तथा उसका साझी किसी को न बनायें तथा भक्तों के प्रति अल्लाह का दायित्व यह है कि जो उस का भागीदार न बनायें उसे दंड न दें। (बुखारी, मुस्लिम) यही अधिकार सर्वोपरि है।

अल्लाह (परमेश्वर) का आदेश है कि :-.

'और तुम्हारे पालन हार ने यह आदेश किया है कि मात्र मेरी पूजा करो तथा माता-पिता के साथ सद्व्यवहार करो।' (सूरह इस्रा, आयत-२३)

उसने यह भी कहा है कि:-

(हे ! ईशदूत) कहो कि आओ मैं तुम्हारे पोषक का आदेश सुनाऊँ, कि उसने तुम्हारे ऊपर यह निषेध घोषित किया है कि उसके साथ किसी को भागीदार न बनाओ और माता-पिता के साथ उचित व्यवहार करो। (६/१५१)

चूंकि यह अल्लाह का सर्वोत्तम अधिकार और धर्म के सभी कर्मों का मूलाधार है इसी लिये ईशदूत (नराशंस) अपने मक्का के तेरह वर्षीय जीवन काल में इसी अधिकार की स्थापना के लिये न्योदित करते रहे और ईश्वर की पूजा में किसी अन्य के भागी होने को नकारते रहे ।

क़ुर्आन की अधिकांश आयतों में भी इसी अधिकार को स्पष्ट किया गया है, तथा इससे सम्बन्धित संदेहों का निवारण किया गया है ।

प्रत्येक नमाज़ी अपनी नमाज में अल्लाह से इस कर्त्तव्य का पालन करने की प्रतिज्ञा निम्न शब्दों में करता है ।

'हम तेरी ही पूजा करते एवं तुझी से सहायता मांगते हैं ।' (सूरह फातिहा, आयत-'५)

इस महान अधिकार को मात्र एक की पूजा अथवा एकेश्वर वाद कहा जाता है दोनों में नाम मात्र अन्तर है किन्तु दोनों का तात्पर्य एक ही है ।

यह एकेश्वर वाद मानव-प्रकृति में विद्यमान है जैसा कि ईशदूत (नराशंस) का कथन है कि 'प्रत्येक शिशु प्रकृति पर पैदा होता है ।' (मुस्लिम २०४७)

'तथा इससे दूरी गलत शिक्षा दिक्षा के फलस्वरूप उत्पन्न होती है ।'

नराशंस के एक अन्य कथन में कहा गया है कि :- शिशु के माता-पिता उसे यहूदी अथवा ईसाई एवं मजूसी बना देते हैं ।'

इस विश्व में पहले मात्र यही एकेश्वर वाद था । द्वैत वाद में उत्पन्न हुआ ।

अल्लाह ने कहा है :-

'सब एक मत थे फिर (मतभेद किया) तो अल्लाह ने दूतों को शुभ समाचार सुनाने तथा सचेत करने के लिये भेजा और उनके साथ सत्य ग्रन्थ उतारे, ताकि उनके मतभेदों के बीच निर्णय दे ।'

एक अन्य स्थान पर कहा है, सब एक ही धर्म पर थे फिर मतभेद कर लिये ।'

अब्बास के पुत्र ने कहा है कि :-

आदिम (आदिमनु) नूह (जल पलावन मनु) के बीच दस शताब्दियों तक सब इस्लाम धर्म पर थे । (इस्लाम का अर्थ है अल्लाह के प्रति पूर्ण विश्वास)

प्रकान्ड विद्वान 'इब्ने कैय्यिम' ने कहा है कि, 'उपरोक्त आयत की यही टिप्पणी है ।'

फिर उन्होंने इसे क़ुर्आन की आयातों से स्पष्ट किया है ।

क़ुर्आन के टीकाकार हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने भी अपनी टीका में इसे सही बताया

जल पलावन मनु की कौम में अनेक पूज्य उस समय बने जब उन्होंने अपने धर्माचारियों के सम्मान में अति किया और अपने ईशदूत को नकार दिया ।

'और कहा कि अपने पूजितों को कदापि नहीं छोड़ेंगे तथा वद्र एवं स्वा, यगूस और यऊक तथा नस्र की (पूजा) नहीं छोड़ेंगे ।' (सूरह-नूह, आ०-२२)

इमाम बुखारी अपनी पुस्तक 'सही बुखारी' में इब्ने अब्बास से उद्धृत करते हैं कि यह मनु के वर्ग के सदाचारी पुरुषों के नाम हैं जिनके निधन के पश्चात कलि ने उनके वर्ग के मन में यह बात डाली कि अपनी सभाओं में उनकी मूर्तियां रखो, और इनके नाम उन्हीं के नाम पर रखो उन्होंने यही किया । परन्तु इन मूर्तियों की पूजा नहीं की । उनकी पूजा उस समय होने लगी जब उनका भी निधन हो गया तथा लोग इन मूर्तियों की वास्तविकता भूल गये । इस्लाम धर्म के प्रकान्ड विद्वान इमाम इब्ने कय्यिम् ने कहा है कि जब इन सदाचारी पुरुषों का निधन हो गया तो लोगों ने इनकी समाधियों पर डेरा डाल दिया फिर उनकी मूर्तियाँ बनाईं और कुछ समय व्यतीत हो जाने पर उनकी पूजा करने लगे । उन्होंने यह भी कहा कि, 'मूर्ति पूजा के विषय में शैतान ने हर कौम को उनकी समझ के अनुसार मूर्ख बनाया है । एक समुदाय को मृतकों के सम्मान के नाम पर मूर्ति-पूजा की ओर बुलाया जैसा कि मनु (नूह) के वर्ग ने किया ।

अनेकेश्वर वादियों में मूर्ति-पूजा का यही कारण है । जहां तक अनेकेश्वर वादियों का सम्बन्ध है उन्होंने ग्रहों के आकार प्रकार की भी मूर्तियाँ बनाईं जिनके सम्बन्ध में उनका विचार था कि यह संसार की व्यवस्था में प्रभावी हैं । इन मूर्तियों के लिये उन्होंने घर बनाये और उनके पुरोहित तथा संरक्षक नियुक्त किये तथा उन पर चढ़ावे चढ़ाये, प्राचीन युग से अब तक द्वैत की यह रीति भूलोक में प्रचलित है ।

इसका प्रारम्भ ईशदूत इब्राहीम की कौम से हुआ जिसका खन्डन उन्होंने किया । उनके तर्क को अपने ज्ञान तथा उनके पूजितों को अपने हाथों से तोड़ कर उनका खन्डन किया । प्रत्युत्तर में उन्होंने इब्राहीम को जीवित अग्नि दन्ड देने की मांग की ।'

एक समुदाय ने चन्द्रमा की प्रतिमा बनायी जिनका यह विचार था कि यह पूज्य है क्योंकि भूलोक का व्यवस्थापक यही है । दूसरे वर्ग ने अग्नि पूजा की जो मजूसी (पारसी) हैं, उन्होंने अग्नि कुन्ड बनाये तथा उनके पुजारी एवं संरक्षक निर्धारित किये, वह अग्नि को एक क्षण के लिये भी बुझने नहीं देते, कुछ लोग जल के पुजारी हैं उनका विचार है कि जल ही प्रत्येक वस्तु का मूल तत्व है, इसी से सब वस्तु की उत्पत्ति तथा पालन-पोषण होता है तथा इसी से शोधन एवं पवित्रता प्राप्त होती है । यही भूलोक की आबादी का

साधन है । कुछ लोग पशु की पूजा करते हैं तथा अश्व-(घोड़े) एवं गायों के पुजारी हैं, कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो जीवित तथा मृत इंसानों की पूजा करते हैं, कुछ पेड़-पौधों और कुछ देवी-देवता की पूजा करते हैं ।

उपरोक्त, अब्दुल्लाह पुत्र अब्बास के, कथन से जो मनु (नूह) के वर्ग में मूर्ति-पूजा के प्रचलन के कारण से सम्बन्धित है निम्नलिखित बातें प्रकाशित होती हैं :-

१. दिवारों पर चित्र लटकाना तथा सभा अथवा किसी स्थान में प्रतिमा स्थापित करना घातक है । इससे लोग शिर्क (अनेकेश्वर वाद) में फंस जाते हैं तथा इन मूर्तियों का सम्मान उन्हें इनकी पूजा तक पहुंचाता है जैसे मनु के वर्ग में हुआ ।

२. शैतान (राक्षस) मानव गण को मार्ग रहित करने तथा धोखा देने की असीम लालसा रखता है और उनकी सद्भावना से अनुचित लाभ उठाने का प्रयास करता है । भलाई की बात की प्रेरणा के बहाने धर्महीन बनाता है । जब उसने देखा कि मनु की कौम सदाचारी जनों से अपार प्रेम करती है तो उनको उनके प्रेम में अतित की प्रेरणा उत्पन्न की और उनकी सभा में उनकी मूर्तियों स्थापित कराई जिससे वह यह चाहता था कि यह धर्महीन तथा सत्य से विचलित हो जायें ।

३. लोगों को गुमराह करने की शैतान की योजना केवल वर्तमान पीढ़ी के लिये सीमित नहीं होती उसकी उस योजना के अन्तरगत आगामी पीढ़ी भी होती है । जब वह नूह की संतान से मूर्ति-पूजा न करा सका तो आगामी पीढ़ी को मूर्तियों की पूजा कराने के लिये सदाचारी जनों की प्रतिमायें स्थापित कराई ।

४. बुरे संसाधनों की ओर से असावधानी उचित नहीं उसका उन्मूलन तथा विरोध करना आवश्यक है ।

५. उपरोक्त कथन से अन्तिम बात यह स्पष्ट होती है कि कृतज्ञ विद्वानों का महत्त्व है एवं उनकी उपस्थिति हितकर है और उनका न होना हानिकर है । जब तक वह रहे शैतान लोगों को गुमराह नहीं कर सका ।

३. तौहीद (एकेश्वर वाद) के भेद :-

एकेश्वर वाद के दो भेद हैं :-

प्रथम- यह स्वीकार करना कि अल्लाह (ईश्वर) ने ही अकेले इस विश्व की उत्पत्ति की है तथा वही इसका व्यवस्थापक है । वही जीवन तथा मृत्यु प्रदान करता है । वही भलाई देता तथा बुराई को रोकता है । इसका नाम तौहीदे-रूबूबियत है । तथा किसी ने इसका विरोध नहीं किया है । अनेकेश्वरवादी मूर्ति के पुजारियों ने भी इसे स्वीकार किया है, तथा इसे नकारने का साहस नहीं किया है, जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह ने कहा है –

'(हे नराशंस !) पूछो कि कौन आकाश एवं धरती से तुम्हें जीविका प्रदान करता है ? कौन कर्णों तथा आंखों का मालिक है ? कौन जीवित को निर्जीव से तथा जीवित से निर्जीव निकालता है और कौन (इस संसार) की योजना बनाता है। वह कह देंगे कि अल्लाह, तो आप कहें कि फिर तुम क्यूं नहीं डरते।' (सूरह १०/आयत ३१)

इस अर्थ की बहुत सी आयतें हैं, जिनसे यह स्पष्ट है कि अनेकेश्वरवादी मूर्तियों के पुजारी भी इसे स्वीकार करते थे कि जगत का पोषक एवं व्यवस्थापक एक अल्लाह है।

द्वित्या - जिसे वह नकारते हैं वह एक अल्लाह की पूजा है जिसका नाम 'तौहीदे इबादत' है। इसका तात्पर्य यह है कि हर प्रकार की पूजा-उपासना मात्र अल्लाह के लिये की जाये, जैसा कि इस्लाम के धर्म सूत्र 'ला इलाह इल्लल्लाह' का अर्थ है। यह धर्म सूत्र हर प्रकार की पूजा अल्लाह के लिये सीमित करता है और अल्लाह के सिवाय किसी की पूजा को नकारता है। यही कारण है कि जब ईश दूत ने अनेकेश्वर वादियों से यह धर्म सूत्र पढ़ने को कहा तो यह कहकर इसको नकार दिये :-

'क्या इस (ईशदूत) ने सब पूजितों को एक पूज्य कर दिया ? यह तो बड़े अचरज का विषय है।' (३८/५)

क्यूंकि वह जानते थे कि जिसने यह धर्म सूत्र पढ़ लिया उस अल्लाह से अन्य के लिये किसी प्रकार की पूजा को अवैध होना स्वीकार कर लिया तथा हर प्रकार की अराधना को अल्लाह के लिये निर्धारित कर लिया।

पूजा उस आन्तरिक एवं वाह्य कर्म तथा कथन का नाम है जिसे अल्लाह पसन्द करता है। जिसने इस धर्म सूत्र को पढ़ने के बाद अल्लाह के अतिरिक्त किसी को पुकारा उसने अपने वचन को विरोध किया।

एक पोषक तथा एक की पूजा दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। एक को स्वीकार करना दूसरे की स्वीकृति को अनिवार्य बना देता है। अतः सभी ईशदूत (उन पर अल्लाह की दया एवं शान्ति हो) अपनी जातियों में इसी की घोषणा करते रहे, और उनके एक पोषक के प्रति विश्वास को एक पूज्य होने का प्रमाण बनाते रहे, जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह ने कहा है :-

'यही अल्लाह तुमाहार पालन हार है उसके सिवाय कोई पूज्य नहीं, अतः उसी की पूजा करो तथा वही हर काम बनाता है।' (कु०, ६/१०२)

'(हे ईश दूत !) उनसे पूछो कि आकाश एवं पृथ्वी को किसने रचा है ? तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने, उनसे कहो कि अल्लाह के सिवाय तुम जिनको पुकारते हो यदि

अल्लाह मुझे कोई दुःख देना चाहे तो यह उसे दूरकर सकते हैं अथवा यदि मुझ पर दया करना चाहे तो यह उसे रोक सकते हैं ?' (सू० २९/आ० ३६)

एक पालनहार की प्रतिज्ञा मानव जाति के लिये स्वभाविक है । कोई अनेकेश्वर वादी भी इसका विरोध नहीं करता नास्तिकों के सिवाय जगत का कोई समुदाय इसे नहीं नकारता, नास्तिक ईश्वर को नहीं मानते तथा समझते हैं कि यह संसार बिना किसी व्यवस्थापक एवं संयोजक के स्वयं चल रहा है, जैसा कि अल्लाह ने इनके संदर्भ मे फरमाया हैं :-

'और इन (नास्तिकों) ने कहा कि हमारा तो यही भौतिक जीवन है । हम यहीं जीवन तथा मृत्यु को प्राप्त होते हैं तथा युग ही हमारा विनाश करता है ।' (सू० ४५ आ०-२४)

फिर उनका खन्डन इन शब्दों में किया है :-

'और उनको इसका कोई ज्ञान नहीं । वह मात्र अनुमान लगाते हैं ।' (४५/२४)

नास्तिकों का इनकार तर्कविहीन है । उनके पास अनुमान मात्र है तथा अनुमान तथ्य के सामने व्यर्थ है, वह अल्लाह के इस प्रश्न का भी कोई उत्तर नहीं दे सके :-

'क्या वह अपने आप बन गये हैं या स्वयं रचयिता हैं, क्या इन्होंने ही आकाश एवं पृथ्वी की उत्पत्ति की है ? वरन वह (अल्लाह के प्रति) विश्वास नहीं रखते !' (कु०, सू० ५२/आ० ३५, ३६)

और न ही वह अल्लाह की इस बात का कोई उत्तर दे सके :-

'यह अल्लाह की रचना है फिर मुझे दिखाओ कि अल्लाह के सिवाये दूसरों की रचना क्या है ।' (३२/११)

'(हे ! ईशदूत) उनसे कहो, कि अल्लाह के सिवाय जिसे तुम पूजते हो मुझे दिखाओ कि उन्होंने धरती में क्या बनाया है अथवा क्या यह आकाश में अंशधारी हैं ।' (कु०, सू०-४६/आ०-४)

जो भी अल्लाह के सिवाय अन्य की पूजा करता है वह मनमें इसे ठीक समझता है जैसा कि फिऔन जिसके संबंध में अल्लाह का यह वचन है :-

'तुम जानते हो कि इन प्रतीकों को आकाश तथा धरती के अधार ने ही उतारा है ।' (कु०, सू०-१७ आ०-१०२)

फिर उसके तथा उसकी कौम के विषय में कहा :-

'तथा उनके मन में इन प्रतीकों का विश्वास हो गया किन्तु उन्होंने अत्याचार तथा

अहंकार के कारण इन्हें नकार दिया ।' (कु०, सू०-१६ आ०-१४)

एवं अल्लाह आदि वर्गों के संदर्भ में कहा है :-

'तथा (अल्लाह ने) 'आद' एवं 'समूद' को (भी ध्वस्त कर दिया) उनके घर तुम्हारे लिये प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, शैतान ने उनके कुकर्मों को उनके लिये रोचक बना दिया और उनको सत्य से रोक दिया और उनको यह सब देखना था ।' (कु०, सू०-२९ आ०-३८)

जैसे इन्सानों के किसी समुदाय ने अद्वैत के इस प्रकार को नहीं नकारा ऐसे ही इन विषयों में द्वैत भी नहीं किया, सभी ने यह मानते रहे हैं कि अल्लाह ही अकेला उत्पत्तिकार तथा विश्व का व्यवस्थापक है । संसार के किसी समुदाय ने ये भी नहीं कहा है, कि विश्व के रचयिता दो हैं जो गुण कर्म में समान हैं । पारसी जो दो रचयिता मानते हैं उनके हां एक बुराई का उत्पत्ति कर्ता है तथा दूसरा भलाई का और बुराई अन्धकार है एवं भलाई प्रकाश, किन्तु वह भी दोनों को बराबर नहीं मानते । उनके यहां प्रकाश ही मूल है तथा अन्धकार सामयिक और प्रकाश अन्धकार से उत्तम है । इसी प्रकार ईसाई जो तीन को मानते हैं उन्होंने तीन को पृथक-पृथक ईश्वर नहीं बनाया और वह इस पर सहमत हैं कि विश्व का उत्पत्ति कर्ता एक ही है, क्यूं कि वह कहते हैं कि पिता सबसे महान है, (पूज्य है)

सबका सारांश यह है कि तौहीदे रुबूबियत अर्थात् जगत का रचयिता एवं व्यवस्थापक एक है । यह ऐसा विषय है जिस पर सभी सहमत हैं और इसमें द्वैत कम हुआ है । किन्तु मुसलमान होने के लिये इतना ही पर्याप्त नहीं 'तौहीदे उलूहियत' अर्थात् एक पूज्य का इकरार भी अनिवार्य है । काफिर (अनेकेश्वर वादी मूर्तियों के पूजक) विशेष रूप से अरब के मूर्ति पूजक जिनमें अन्तिम महा ईशदूत भेजे गये, वह एक रचयिता को मानते थे किन्तु एक पूज्य का इकरार न करने के कारण मुसलमान नहीं बन सके ।

पवित्र कुर्आन की आयतों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जायेगा कि वह एक रचयिता तथा विश्व व्यवस्थापक से एक के पूज्य होने की दलील (तर्क) देती है, और मात्र एक अल्लाह की अराधना की मांग करती है । इन आयातों में द्वैतवादी जिस बात को नकारते हैं उसी का आदेश किया जाता है और जिसे मानते हैं उसी से तर्क दिया जाता है । इन आयात में एक की पूज्य का आदेश है और यह बताया गया है कि वह एक रचयिता को स्वीकार करते हैं ।

पवित्र कुर्आन में सर्वप्रथम निर्देश यह किया गया है :-

'हे मानव गण ! अपने पालनहार की पूजा करो जिसने तुम्हें तथा तुम से पूर्व जनों को पैदा किया ताकि तुम संयमी बन जाओ जिसने तुम्हारे लिये धरती को बिछावन तथा आकाश को छत बनाया एवं आकाश से जल बरसाया तथा तुम्हारी जीविका के लिये

फल उपजाये, अतः अल्लाह का भागी न बनाओ और तुम जानते हो ।' (पवित्र कुर्आन, सू०-२/आ-२१,२२)

पवित्र कुर्आन में अनन्तर एक अल्लाह की अराधना की घोषणा तथा उसका आदेश एवं इस प्रकरण में संदेहों का खंडन किया गया है ।

कुर्आन की न केवल प्रत्येक सूरह अपितु प्रत्येक आयत में इसी अद्वैत का आदेश दिया गया है, इसलिये कि पवित्र कुर्आन में या तो अल्लाह के नाम एवं गुण कर्म को बताया गया है और यही एक पोषक के प्रति विश्वास है अथवा एक अल्लाह की पूजा की घोषणा है और अल्लाह से अन्य की पूजा का प्रतिरोध और यही 'एकेश्वरवाद' है या इस बात से सूचित किया गया है कि अल्लाह ने एकेश्वर वादियों तथा अपने कृतज्ञों को कैसे लोक, परलोक में पुरस्कृत करता है तथा यही अद्वैत का प्रतिफल है अथवा पवित्र कुर्आन में अनेक पूजितों के उपासकों के लिये लोक, परलोक में जो घोर दन्ड है उससे सूचित किया गया है तथा अद्वैत द्रोहियों का यही दन्ड है । या फिर कुर्आन में आदेशों तथा विधि विधान का वर्णन है और यह अद्वैत के अधिकारों के अन्तर्गत आते हैं क्यूंकि नियन्ता मात्र अल्लाह है । एक सूत्र 'ला एलाह इल्लल्लाह' अद्वैत के सभी भेदों को अपने में समेटे हुये है । क्यूंकि इसमें 'नहीं' भी है तथा 'हां' भी (अल्लाह से अन्य के पूज्य होने को नकारना और मात्र अल्लाह के पूज्य होने को स्वीकार करना है । इस सूत्र में वियोग भी है तथा मित्रता भी । मैत्री मात्र अल्लाह से और वियोग अल्लाह के सिवाय सबसे जैसे कि अल्लाह ने अपने मित्र हजरत इबराहीम के संबंध में बताया है कि उन्होंने अपनी कौम से कहा कि :-

'मैं तुम जिसके उपासक हो उससे अलग हूं, किन्तु जिस (अल्लाह) ने मुझे पैदा किया है वह मुझे रास्ता दिखायेगा ।' (पवित्र कु० सू०-४३/आ०-२६, २७)

तथा यही अल्लाह के भेजे हुये प्रत्येक ईशदूत का चरित्र था ।

पवित्र अल्लाह का कुर्आन में वचन है कि, 'और हम (अल्लाह) ने प्रत्येक जन समूह में दूत भेजा है कि अल्लाह की पूजा करो एवं मूर्तियों से अलग रहो ।' (सू०- १६/आ०- ३६)

तथापि अल्लाह का वचन है :-

'अतः जो मूर्तियों को नकार दे तथा अल्लाह के प्रति विश्वास करे, उसने निश्चय ही दृढ़कड़ा पकड़ लिया जिसे टूटना नहीं है ।' (२/२५६)

जिस किसी ने 'ला एलाह इल्लल्लाह' कहा उसने अल्लाह से अन्य की पूजा को नकार दिया तथा अपने को अल्लाह की पूजा का बन्धक बना लिया । यह वह प्रतिज्ञा है जिसका भार इन्सान स्वयं अपने ऊपर लेता है ।

जिसने वचन तोड़ दिया उसने अपने ऊपर तोड़ दिया और जिसने अपना वचन जिसे अल्लाह को दिया है पूरा कर दिया वह उसे बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा ।

'ला एलाह इल्लल्लाह' अर्थात् अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य नहीं एक अल्लाह की आराधना का एलान है । क्यूंकि 'इलाह' का अर्थ पूज्य है इसलिये इस धर्म सूत्र का अर्थ यह है कि अल्लाह के सिवाय वास्तव में कोई पूज्य नहीं । इस धर्म सूत्र के अर्थ को जानते तथा मानते हुये, जो द्वैत को नकारता हो और एक अल्लाह के प्रति पूर्ण विश्वास रखता हो वही वास्तव में 'मुसलमान' है और जिसने मनकी आस्था विना प्रत्यक्ष रूप से इसके दायित्व को पूरा किया वह 'मुनाफिक़' है और जो कोई मुंह से बोले परन्तु इस के विपरीत काम करे वह 'काफिर' है यद्यपि इसका जाप लगातार करता हो जैसे इस समय समाधी पूजक है जो इस सूत्र को जपते हैं किन्तु इसका अर्थ नहीं जानते, तथा उनके आचरण एवं कर्म बदलने में इसका कोई प्रभाव नहीं दिखाई देता, 'लाइलाह इल्लल्लाह' भी कहते हैं और यह भी पुकारते हैं कि हे पीर ! हे ख्वाजा ! सहाय, वह मरे हुये को सहायतार्थ पुकारते हैं तथा विपत्तियों में उनसे गुहार करते हैं । पहले के अनेकेश्वर वादी इसका अर्थ इनसे अधिक समझते थे । जब ईश दूत नराशंस ने उनसे लाइलाह इल्लल्लाह कहने को कहा तो वह समझ गये कि उनसे मूर्तियों की पूजा छोड़ने एवं एक अल्लाह (परमेश्वर) की वन्दना करने को कहा जा रहा है । अतः उन्होंने कहा कि, 'क्या इस (ईशदूत) ने कई पूजितों को एक पूज्य बना दिया ।' (३८/५)

तथा हूद (एक ईश दूत का नाम) की कौम ने उनसे कहा कि :-

'क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हम मात्र अल्लाह की पूजा करें और जिनको हमारे पूर्वज पूजते थे त्याग दें ।' (सूरह न०-७, आ०-७०)

तथा ईशदूत 'सालेह' की कौम ने उनसे कहा :-

'क्या तुम हमें उनकी पूजा से रोकते हो जिनकी पूजा हमारे पूर्वज कर रहे थे ।' (११/६२)

और इनसे पूर्व 'नूह' की कौम ने कहा :-

'तथा उन्होंने कहा कि तुम कदापि अपने पूजितों को न छोड़ो । एवं 'वद्द' को न छोड़ो, न 'स्वाअ' को, न 'यगूष' को एवं 'यऊक' तथा 'नस्र' को ।' (पवित्र कु० सू०-७१, आ०-२३)

काफिरों (कृतघ्नों) ने लाइलाह इल्लल्लाह का अर्थ यह समझा कि मूर्तियों की पूजा त्याग कर मात्र एक अल्लाह की अराधना की जाये, तथा इसी लिये उन्होंने इस धर्म सूत्र को नकार दिया क्यूंकि इसको स्वीकार कर लेने के पश्चात 'लात, मानत तथा उज़्ज़ा' की पूजा समप्त हो जायेगी किन्तु इस समय के समाधी पूजक इस प्रतिरोध को नहीं समझ

सके, वह इस धर्म सूत्र को भी जपते हैं और मरे हुये की पूजा भी करते हैं। कुछ लोग एलाह का अर्थ यह लेते हैं कि जो पैदा करने अविष्कार करने, रचने का सामर्थ्य रखता हो, इस प्रकार इस सूत्र का अर्थ यह हुआ कि अल्लाह के सिवाय कोई पुनर्निमाण का सामर्थ्य नहीं रखता है, परन्तु यह भीषण गलती है इतनी बात तो अनेकेश्वर वादी भी मानते थे। जैसा कि अल्लाह ने उनके सम्बन्ध में बताया है कि रचना, उत्पत्ति, जीवन एवं मृत्यु अल्लाह के हाथ में है तथापि वह मुसलमान नहीं बन सके, यद्यपि यह बातें इस सूत्र के अन्तर्गत है तथापि इसका मूल उद्देश्य यह नहीं है।

तौहीदे इबादत (एकेश्वर भक्ति में शिर्क)

पूजा अराधना में शिर्क का अर्थ एक अल्लाह की पूजा अथवा पूजा का कोई कार्य अल्लाह के सिवाय अन्य के लिये करना है।

हम पहले ही संकेत दे चुके हैं कि इस धरती पर शिर्क कैसे उत्पन्न हुआ तथा आज तक कैसे मानव समाज में प्रचलित है उनके सिवाय जिन पर अल्लाह (परमेश्वर) की कृपा हुई।

पूंजा में शिर्क (मिश्रण) के दो प्रकार हैं :-

प्रथम– शिर्के अक्बर अर्थात भीषण शिर्क जो पुरुष को धर्म रहित बना देता है, जैसा अल्लाह से अन्य के लिये बलि चढ़ाना अथवा विनय या इस प्रकार की कोई अन्य उपासना, अराधना करना।

द्वित्या- न्यून शिर्क जो धर्म से नहीं निकालता किन्तु इसके कारण एकेश्वर वाद में कमी उत्पन्न हो जाती है एवं पुरुष भीषण शिर्क तक पहुंच जाता है। जैसे– अल्लाह से अन्य की शपथ ग्रहण करना, अथवा दिखावे के लिये पूजा, उपासना करना, अथवा यह कहना कि जैसे अल्लाह चाहे और आप चाहें या यह कहना कि यदि अल्लाह तथा आप न होते और इसी प्रकार के अन्य वाक्य जो बोले जायें, किन्तु उनका अर्थ न लिया जाये, मुसल्मानों में शिर्क का प्रचलन बहुत है और इसके प्रचलित होने के अनेक कारण हैं। उदाहरणार्थ धर्म शास्त्र कुर्आन और सुन्नत अर्थात अन्तिम ईशदूत नराशंस के आदर्शों से दूरी, पूर्वजों के अनुसरण में अंधत्व, मृतकों के सम्मान में अतिशय, और उनकी समाधियों का निर्माण, धर्म के तत्व से अज्ञानता जिसे अल्लाह के दूत नराशंस लाये।

नराशंस के साथी 'उमर पुत्र खत्ताब' कहते हैं कि :-

जब इस्लाम में ऐसे लोग पैदा होंगे जो मूर्खता के युग को नहीं जानते तो इस्लाम की कड़ियां एक एक करके टूट जायेंगी ।

शिर्क (अनेकेश्वर वाद) के प्रचलित होने के कारणों में उन सन्देहों तथा कथाओं की ख्याति भी है, जिनसे अधिकांश लोग पथ भ्रमित हो गये हैं ।

यह मिश्रण वादी जिन सन्देहों को अपने दुष्कर्मों के लिये आधार बनाते हैं इनमें कुछ ऐसे हैं जिनको पूर्व के मिश्रणवादियों ने प्रस्तुत किये हैं और कुछ इस युग के जो इस प्रकार हैं :-

१. प्रथम सन्देह :-

यह सन्देह आधुनिक एवं प्राचीन मिश्रण वादियों में समान रूप से पाया जाता है और यह अपने पूर्वजों की रीतियों का सहारा लेना तथा उनको दलील बनाना है जैसे कि अल्लाह (परमेश्वर) ने फरमाया है ।

'और इसी प्रकार आप (नराशंस) से पूर्व हम (अल्लाह) ने किसी नगर में कोई दूत सचेत कर्ता भेजा तो उसके सम्पन्न व्यक्तियों ने कहा कि हमने अपने पूर्वजों को एक पथ पर पाया और हम उन्हीं के पदचिन्हों का अनुसरण करेंगे ।' (कु० सू०-४३/आ०-२३)

इस तर्क का सहारा वही लेते हैं जो अपने वाद को तर्क संगत नहीं कर सकते किन्तु वाद-विवाद के क्षेत्र में ऐसे तर्क का कोई महत्त्व तथा मूल्य नहीं है, क्योंकि उनके पूर्वज स्वयं सत्य पथ पर नहीं थे और जो सत्य का पालन न करे उसका अनुसरण वर्जित है, पवित्र अल्लाह ने कहा है :-

'क्या उनके पूर्वज कुछ न जानते हों और न सीधे रास्ते पर हों ? तब भी उन्हीं के अनुगामी रहेंगे ।' (पवित्र कुर्आन सू० ४, आ०-१०४)

एक और स्थान में कहा है :-

'क्या यद्यपि उनके पूर्वज तनिक समझ न रखते रहे हों और न सत्य पथ का अनुसरण करते रहे हों ? (तब भी उन्हीं का अनुकरण करेंगे) ।' (कु० सू०-२/आ०-१७०)

पूर्वजों का अनुसरण उस समय प्रशंसनीय है जब वह सत्य का आचरण करते रहे हों । अल्लाह ने ईशदूत 'यूसुफ' के संदर्भ में कहा है :-

'और मैंने अपने पूर्वजों इब्राहीम इस्हाक और याकूब के मत का अनुसरण किया हमारे लिये यह उचित नहीं है कि अल्लाह के साथ किसी को साझी बनायें । हम पर यह

अल्लाह की दया है, तथा लोगों पर किन्तु अधिकांश लोग कृतज्ञ नहीं होते ।' (कु०, सू० १२/आ०-३८)

एक अन्य स्थान पर अल्लाह ने कहा है :-

'तथा जो विश्वास किये एवं उनकी संतान ने विश्वास के साथ उनका अनुसरण किया हम उनकी संतान को भी उनके साथ (स्वर्ग में) कर देंगे ।' (सू०-'५०/आ०-२१)

यह सन्देह मिश्रण वादियों के मन में ऐसा बैठ गया है, कि वह सदा इसे ईशदूतों के विरोध में प्रस्तुत करते रहे । ईशदूत 'नूह' ने जब अपनी जाति को अल्लाह की पूजा के लिये आमंत्रित किया, तो उन्होंने उसके उत्तर में यह सन्देह प्रस्तुत किया । पवित्र कुर्आन में है कि :-

'नूह ने कहा कि हे मेरी कौम अल्लाह की पूजा करो उसके सिवाय कोई पूज्य नहीं है, क्या तुम डरते नहीं, उनकी कौम के अवैइकारी मुख्या कहने लगे कि यह तुम्हारे जैसा पुरुष है तुम पर अपनी बड़ाई चाहता है । यदि अल्लाह चाहता तो फरिश्ते उतारता, हमने तो ऐसी बात अपने पूर्वजों से नहीं सुनी है ।' (कु०-२३/२३,२४)

ईशदूत 'सालेह' से उनकी कौम ने कहा :-

'क्या तुम हमें उनकी पूजा से रोकते हो जिनकी पूजा हमारे पूर्वज करते रहे ।' (११/६२)

तथा ईशदूत 'शुऐब' की जाति ने उनसे कहा :-

'क्या तुम्हारी नमाज़ तुम को यह आज्ञा दे रही है कि हम अपने पूर्वजों के पूजितों को त्याग दें ।' (११/८७)

ईशदूत 'इबराहीम' ने जब अपनी जाति को तर्क द्वारा निरुत्तर कर दिया तो उन्होंने भी यही कहा :-

'(इबराहीम ने प्रश्न किया) कि तुम किसे पूजते हो ? उन्होंने कहा कि हम मूर्तियां पूजते हैं, तथा उन्हीं दन्डवत करते हैं । उन्होंने कहा कि तुम जब पुकारते हो तो वह सुनते हैं, अथवा तुमको लाभ या हानि पहुंचाते हैं ? उन्होंने उत्तर दिया कि हमने अपने पूर्वजों को ऐसे ही करते पाया है ।' (२६/७०-७४)

फिऔन ने मूसा से कहा,

'(फिऔन ने) कहा कि भले, पूर्वजों की क्या दशा होनी है ।' (२०/५१)

इसका तात्पर्य यह है कि कुफ्र (अनेकेश्वरवाद) एक मत है तथा मिश्रण वादियों के पास यही व्यर्थ तथा निर्मूल दलील है ।

२. दूसरा सन्देह :-

यह सन्देह मक्का के निवासियों तथा अन्य मिश्रण वादियों ने प्रस्तुत किया। उनका कहना था, कि वह जो मिश्रण कर रहे हैं। वह समुचित है क्यूंकि अल्लाह ने इसको हमारे भाग्य में लिख दिया है। अल्लाह ने निम्नांकित आयत में कहा है।

'मुशरिक (मिश्रण वादी) कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता तो हमशिर्क नहीं करते।' न हमारे बाप दादा तथा हम कोई वस्तु स्वयं निषेध न करते।' (६/१४८)

इसी प्रकार अल्लाह ने एक जगह कहा है,

'तथा जिन्होंने मिश्रण किया, यह कहा कि यदि अल्लाह चाहता तो हम तथा हमारे बाप दादा अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं पूजते तथा उसकी आज्ञा के बिना किसी वस्तु को वर्जित न बनाते।' (१६/३५)

एक अन्य सुरह में उसका वचन है,

'यदि रहमाने (दयावान अल्लाह) चाहता तो हम इनकी पूजा न करते।' (४३/२०)

पवित्र कुर्आन के टीकाकार 'हाफिज़ इब्ने कसीर' ने उपरोक्त आयत का वर्णन करते हुये लिखा है कि इस आयत में अल्लाह ने मिश्रणकारियों के मिश्रण तथा उनके अवर्जित चीजों को वर्जित घोषित करने का वर्णन किया है।

'वह कहते हैं, कि हमारे शिर्क और नाजायज़ करने को अल्लाह जानता है और यह सामर्थ्य रखता है कि हमारे मन में ईमान (सत्य विश्वास) डाल दे और हमको अधर्म से रोक दे, किन्तु उसने ऐसा नहीं किया, इससे विदित हुआ कि हमारे कर्म तथा कार्य अल्लाह की इच्छा के अनुसार है और वह हमारे कर्मों से संतुष्ट है।

यह निराधार तथा मिथ्या तर्क है यदि यह बात सच होती तो अल्लाह उन्हें क्यूं दन्डित करता तथा उन्हें नाश करता और उनसे बदला लेता।

'(हे ! ईश दूत) उनसे पूछो कि तुम्हारे पास इस विषय में कोई ज्ञान है।' अर्थात इस विषय में कि अल्लाह तुम्हारे इस कर्म से सन्तुष्ट है, तुम उसे हमारे सामने प्रस्तुत कर दो। वह तो मात्र अनुमान का अनुसरण करते हैं अर्थात् यह केवल निराधार दावा है और वह अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगा रहे हैं। '(तफसीर इब्नेकसीर- २/१८६)

हाफिज़ इब्ने कसीर कहते हैं कि, उनकी बात का सारांश यह है कि यदि अल्लाह हमारे कर्मों से असंतुष्ट होता तो हमें दन्डित करता और हमको इन कर्मों के करने का

सामर्थ्य न देता । अल्लाह ने इस सन्देह का खंडन करते हुये कहा है, कि ईश दूतों का दायित्व मात्र सन्देश पहुंचाना है ।

'हम (अल्लाह) नें प्रत्येक वर्ग में उपदेशक भेजे कि मात्र अल्लाह की पूजा करो तथा मिथ्या पूजितों से बचो, तो कुछ को अल्लाह ने सीधा रास्ता दिखा दिया और कुछ पर गुमराही सिद्ध हो गई तो विश्व की यात्रा करो तथा देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ ।' (१६/३६)

परिस्थिति ऐसी नहीं । जैसे तुम्हारा अनुमान है कि अल्लाह ने तुम्हारी निन्दा नहीं की, अल्लाह ने तो तुम्हारी घोर निन्दा की है, तथा तुम्हीं कड़ाई के साथ शिर्क से रोका है एवं प्रत्येक युग तथा जाति में अपने उपदेशक भेजे और सभी ईशदूत एक अल्लाह की पूजा का सन्देश देते रहे तथा अल्लाह से अन्य की पूजा से रोकते रहे, जैसे कि उसने कहा है कि :-

'अल्लाह की पूजा करो तथा मिथ्या पूजितों से बचो ।' (१६/३६)

जब से 'नूह' की जाति में शिर्क (मिश्रण) आरंभ हुआ, अल्लाह इसी निमंत्रण के साथ अवतारों को भेजता रहा, मानव जगत के प्रथम ईश दूत नूह (मनु) थे, तथा अन्तिम मुहम्मद (नराशंस) जिन का उपदेश पूरे मानव संसार तथा जिनों के लिये है । इन सभी उपदेशकों के विषय में अल्लाह ने कहा है,

'और तुम (नराशंस) से पूर्व हम (अल्लाह) ने जो भी दूत भेजा उसे आदेश करते रहे कि मुझसे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं । अतः मात्र मेरी पूजा करते रहो ।' (सू० २१/आ०२५)

तथा उसका वचन है,

'(हे नराशंस!) तुमसे पूर्व हमने जो उपदेशक (रसूल) भेजे उनसे पूछ लो कि क्या हमने दयावान (अल्लाह) के सिवाय पूज्य बनाये हैं जो पूजे जायें ।' (कु०, सू०-४३ आ०-४५)

तथा आयत (१६/३६) में अल्लाह ने कहा है, कि

'हम प्रत्येक जन-समूह में एक उपदेशक भेज चुके हैं कि अल्लाह की पूजा करो तथा मिथ्या पूजितों से बचो ।

फिर मिश्रण वादियों का यह कथन कैसे उचित हो सकता है कि :-

'यदि अल्लाह चाहता तो हम उसके सिवाय कुछ नहीं पूजते ।' (१६/३५)

अल्लाह की वैधानिक इच्छा का मिश्रण वादियों से कोई लगाव नहीं, इस लिये कि अल्लाह ने अपने दूतों द्वारा उन्हें इससे रोका है किन्तु यदि यह कहा जाय- अल्लाह ने उन्हें ऐसा करने का सामर्थ्य प्रदान किया है, तो इसमें उनके लिये कोई तर्क नहीं है ।

'हाफिज़ इब्ने कसीर यह भी कहते हैं, कि अल्लाह ने यह भी बता दिया है कि ईश दूतों की चेतावनी के पश्चात उनके कुकर्मों के कारण उन्हें संसार ही में दन्डित किया गया ।' (तफसीर इब्नेकसीर २/५८६-५८७)

इस सन्देह को प्रस्तुत करने से मिश्रण वादियों का उद्देश्य अपने दुष्कर्मों के लिये क्षमा याचना करना नहीं क्यूंकि वे अपने दुष्कर्मों को बुरा नहीं समझते वह तो यही मानते हैं कि वह पुण्य कर रहे हैं । वह बुतों की पूजा इसलिए करते हैं कि वह उन्हीं मान-मर्यादा में अल्लाह के समीप कर देंगे ।

इस सन्देह को प्रस्तुत करने से उनका प्रयोजन यह है कि उनके कुकर्म वैधानिक एवं अल्लाह को प्रिय हैं । अल्लाह ने इसका खन्डन करते हुये कहा है,

'यदि यथार्थ यही होता जो वह प्रस्तुत कर रहे हैं, तो अल्लाह उनकी निन्दा के लिये न तो अपने रसूलों (उपदेशकों) को भेजता न उनके दुराचारों के कारण उन्हें दण्डित करता ।'

३- तीसरा सन्देह :-

उनके सन्देहों में एक यह है कि मात्र मुख से लाइलाह इल्लाह का कथन स्वर्ग में प्रवेश के लिये काफी है । चाहे इसके बाद इंसान कैसा ही मिश्रणता एवं नास्तिकता का कर्म करें । इस प्रकरण में वह ईश दूत नराशंस के उन वचनों के ऊपरी अर्थ को लेते हैं, जिनमें यह कहा गया है कि जिसने अपने मुख से अल्लाह के एक मात्र पूज्य होने और मुहम्मद (नराशंस) के दूतत्व की (उन पर अल्लाह की दया एवं शान्ति हो) गवाही दिया वह नरक की अग्नि पर निषेध हो गया ।

उनके इस संशय का उत्तर यह है कि इससे तात्पर्य वह व्यक्ति है जिसने लाएलाह इल्लल्लाह कहा तथा इसी पर उसका निधन हुआ । शिर्क (मिश्रण) करके उसने इस सूत्र को नकारा नहीं, वरन स्वच्छता से इस धर्म सूत्र को अंगीकार किया तथा अल्लाह के सिवाय पूजितों को नकार दिया और इसी दशा में उसका निधन हो गया, जैसा कि 'उतबान' की हदीस में वर्णित किया गया है कि :-

'निःसन्देह अल्लाह ने नरक की अग्नि पर उसे निषेध किया है जिसने अल्लाह की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिये इस सूत्र को कहा (सही मुस्लिम १/४५६) तथा 'मुस्लि' में यह भी है कि जिसने यह धर्मसूत्र लाएलाह इल्लल्लाह (अर्थात अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य

नहीं) और अल्लाह के सिवाय जिसकी भी पूजा की जाती है उसे नकार दिया तो उसका धन तथा रक्त निषेध हो गया अर्थात उसके माँल पर हाथ डालने तथा उसके रक्तपात की अनुमति नहीं और उसका हिसाब अल्लाह पर है ।' (मुस्लिम १/५३)

इस हदीस (वचन) में अन्ति ईश दूत ने धन एवं प्राण के सम्मान को दो बातों से प्रतिबन्धित किया है, प्रथम- लाइलाह इल्लल्लाह कहना, दूसरी- अल्लाह के सिवाय पूजितों को नकारना, इस प्रकार व्यर्थ लाइलाह-इल्लल्लाह के उच्चार को यथेष्ट नहीं कहा गया, वरन इसका कथन भी आवश्यक है तथा इसके अनुसार कर्म भी अनिवार्य है, मात्र इस धर्म सूत्र का कथन स्वर्ग में जाने तथा नरक से मुक्ति के लिये यथेष्ट नहीं है, कोई सूत्र उसी समय उपयोगी तथा लाभकारी होता है, जब उसके सभी प्रतिबन्ध का पालन किया जाये तथा इसके मार्ग में कोई बाधा उत्पन्न नहो ।

हसन (एक सुप्रसिद्ध विद्वान) से पूछा गया कि,

जिसने 'लाएलाह इल्लल्लाह' कहा वह स्वर्ग में प्रवेश कर गया ?

वह कहने लगे, जिसने लाएलाह इल्लल्लाह (अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं) कहा तथा इसके दायित्व एवं आकांक्षा को पूरा किया वह स्वर्ग में चला गया ।

वहब बिन मुनब्बेह ने उस व्यक्ति से कहा, जिसने यह प्रश्न किया कि, क्या लाएलाह इल्लल्लाह स्वर्ग की कुञ्जी नहीं कहा कि क्यूं नहीं किन्तु प्रत्येक कुञ्जी के दांत होते हैं, यदि ऐसी कुञ्जी लायेगा जिसके दांत हों तो वह तेरे लिये खोल देगी, अन्यथा न खोल सकेगी ।

अतः यह कैसे कहा जा सकता है कि केवल लाएलाह इल्लल्लाह का कथन स्वर्ग में जाने के लिए पर्याप्त है ? भले ही वह मरे हुये लोगों से प्रार्थना करता हो तथा दुःखों में उनसे गुहार करता हो एवं अल्लाह के सिवाय पूजितों को नकारता भी न हो । यह तो खुला धोका है ।

४- चौथा सन्देह :-

यह मिथ्या विचार भी प्रस्तुत किया जा रहा है कि जब तक लाएलाह इल्लल्लाह मुहम्मदर्रसूलुल्लाह कहते रहेंगे मुसलमानों में शिर्क (मिश्रण) नहीं आयेगा, सदाचारियों की समाधियों के समीप जो भी किया जाता है वह शिर्क नहीं .

इस सन्देह का उत्तर यह है कि, ईश दूत (नराशंस) ने बताया कि इस वर्ग में भी यहूदियों तथा ईसाईयों के समान कर्म पाये जायेंगे उनका एक आचरण यह भी था कि

उन्होंने अल्लाह को छोड़कर अपने विद्वानों तथा आचारीयों को रब्ब (पूज्य) बनाया था ।

आपने यह भी फरमाया, कि तुम हर बात में अपने से पूर्व जनों का अनुसरण करोगे, यद्रि वह गोह (एक जन्तु का नाम) की बिल में घुसे होंगे तो तुम भी उसमें घुसोगे ।

आपके सहचरों ने प्रश्न किया कि :-

यहूदियों तथा इसाईयों का ? आपने फरमाया कि फिर कौन ? अर्थात इससे तात्पर्य नहीं है ।

इस वचम में अन्तिम ईशदूत ने बताया है कि मुसलमान वह सब करेंगे जो पूर्व के वर्गों ने किया, उसका सम्बन्ध धार्मिक विषय से हो अथवा आचरण या राजनीति से जासे पहले की जातियों में शिर्क था, उसी प्रकार मुसलमानों ने भी शिर्क पाया जायेगा ।

ईशदूत ने जो बताया था वह उत्पन्न हो चुका है, अल्लाह के सिवाय समाधियों की अनेक रूप से पूजा की जाती है तथा उन पर उपहार अर्पण किये जाते हैं ।

नराशंस ने यह भी कहा कि :-

उस समय तक प्रलय नहीं होगी, जब तक मुसलमानों का एक वंश मिश्रणकारियों से नहीं मिल जायेगा, तथा जब तक मुसलमानों में कुछ समुदाय बुतों की पूजा न करेंगे । (उबू दाऊद, हदीस न० ४२५२- तथा इब्ने- माजा) मुसलमानों में शिर्क, तथा विनाशकारी बातें एवं गुमराह समुदाय उत्पन्न हो चुके हैं जिसके कारण बहुत से लोग इस्लाम के घेरे से निकल चुकें हैं ।

५- पांचवां सन्देह :

एक और सन्देह के लिये वह ईशदूत के इस वचन से तर्क देते हैं कि :

'निश्चय ही शैतान इससे निराश हो चुका है कि अरब द्वीप में नमाज़ी उसकी पूजा करेंगे ।' (यह हदीस सही है और मुस्लिम तथा अन्य पुस्तकों में है)

नराशंस के उपरोक्त वचन से यह दलील देना कि अरब द्वीप में शिर्क होना असंभव है, इसका उत्तर इस्लामिक विद्वान, इब्ने रजब ने इस प्रकार दिया है कि इसका तात्पर्य यह है कि पूरे मुसलमान महाशिर्क पर सहमत नहीं होंगे ।

हाफिज़ इब्ने कसीर ने भी क़ुर्आन की एक आयत जिसका अनुवाद यह है कि :-

'आज काफिर तुम्हारे धर्म से निराश हो गये ।'

इसी बात की ओर संकेत किया है ।

दूसरी बात यह है कि इस हदीस में यह कहा गया है कि 'शैतान निराश हो गया' यह नहीं कहा गया है कि वह निराश कर दिया गया, उसका स्वयं निराश होना । उसके स्वयं के अनुमान से है, ज्ञान पर आधारित नहीं, क्योंकि उसे अपरोक्ष का ज्ञान नहीं है, इसका ज्ञान तो मात्र अल्लाह को है, तथा उसका अनुमान निराधार एवं मिथ्या है । इसे उपरोक्त हदीसें प्रमाणित करती हैं, जिनमें कहा गया है कि मुसलमानों में शिर्क उत्पन्न होगा ।

इसके अतिरिक्त शैतान के इस अनुमान तथा आकलन को इतिहास भी झुठलाता है क्योंकि नराशंस के निधन के पश्चात कितने ही अरब अनेक रूप से इस्लाम धर्म से फिर गये ।

६- छठा संदेह :-

उनका एक सन्देह यह भी है कि वह कहते हैं कि हम पुनीत पूर्वजों तथा भगतों से यह नहीं चाहते कि वह हमारी आवश्यकतायें पूरी करदें, अपितु यह चाहते हैं, कि वह अल्लाह के पास हमारी संस्तुति करें, क्योंकि यह पुनीत जन अल्लाह के प्रिय हैं, तथा संस्तुति का प्रमाण तो पवित्र कुर्आन एवं ईश दूत नराशंस के वचनों में विद्यमान हैं । इस संशय का उत्तर यह है कि यही बात तो मिश्रण वादी भी अल्लाह से अन्य के साथ अपना सम्पर्क समुचित सिद्ध करने के लिये कहते थे । जैसा कि उनके विषय में अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में कहा है,

'तथा जिन्होंने अल्लाह के सिवा मित्र बना लिये (वह कहते हैं) हम तो उनकी पूजा इसलिए करते हैं कि वह हमको अल्लाह से निकट कर दें । (सू०-३९/आ०-३)

एक अन्य आयत में अल्लाह ने कहा है, कि :-

'तथा वह अल्लाह से अन्य उसे पूजते हैं जो उनको हानि तथा लाभ नहीं पहुंचा सकते, एवं कहते हैं कि वह अल्लाह के पास हमारे संस्तुति कर्ता हैं !' (सू०-१०, आ०-१८)

दूसरी बात यह है कि शिफारिस (संस्तुति) तो यथार्थ है, किन्तु मात्र अल्लाह के अधिकार में है ।

अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में कहा है कि :-

'(हे ईश दूत !) उनसे कह दो, कि सब संस्तुति अल्लाह के अधिकार में है, आकाश एवं पृथ्वी में उसी का राज्य है । (सू०-३९, आ०-४४)

शिफारिस अल्लाह से की जाती है न कि मृतकों से, तथा अल्लाह ने हमको बताया है कि उसकी दो शर्ते हैं :-

प्रथम- यह कि संस्तुति कार को अल्लाह की ओर से संस्तुति की अनुमति प्राप्त हो उसका कथन है ।

'कौन है जो उसके पास उसकी अनुमति बिना शिफारिस करे ?' (पवित्र कुर्आन, सू॰-२, आ॰-२५५)

दूसरी- शर्त यह है कि जिसके लिये संस्तुति की जाय अल्लाह उसके कर्म तथा कथन से प्रसन्न हो, अल्लाह ने कहा है,

'वह (स्वर्ग दूत) उसी के लिये प्रशंसा करते हैं जिससे वह (अल्लाह) प्रसन्न हो ।' (कु॰ सू॰-२१, आ॰-२८)

एक अन्य आयत में उसका वचन है कि,

'तथा आसमान में बहुत से फरिश्ते हैं जिनकी शिफारिस काम नहीं आ सकती, परन्तु इसके बाद कि अल्लाह जिसके लिये चाहे और प्रसन्न हो उसके लिये अनुमति दे ।' (५३/२६)

तथा उसका वचन है कि,

'उस दिन किसी की संस्तुति काम न आयेगी किन्तु जिसे रहमान (अल्लाह) अनुमति प्रदान करें तथा जिसकी बात उसे अच्छी लगे ।' (२०/१०९)

अल्लाह इसकी अनुमति नहीं दी है कि फरिश्तों (स्वर्ग दूतों) या ईशदूतों अथवा बुतों से संस्तुति की मांग की जाये, यह अल्लाह के अधिकार में है तथा उसी से मांगी जाती है उसने कहा है कि,

'कह दो कि सभी संस्तुति मात्र अल्लाह के अधिकारी में है ।' (२९/४४)

वही शिफारिस की अनुमति देता है यदि उसकी अनुमति न हो तो कोई उस सदन में किसी के लिये संस्तुति का साहस नहीं कर सकता, उसके वहां सांसारिक रीति नहीं है कि किसी की अनुमति के बिना भी उसके समक्ष शिफारिस की जाती है तथा वह न चाहते हुये भी शिफारिस मान लेता है, क्यूंकि जिससे शिफारिस की जाती है उसे भी संस्तुति कर्ता के सहयोग की जरूरत होती है, इसीलिये उसकी अनुमति के बिना भी शिफारिस की जाये तो स्वीकार कर लेता है ।

अल्लाह तो निस्पृह है, उसे किसी की सहायता की जरूरत नहीं, सभी को उसकी जरूरत है ।

दूसरी बात यह है कि अधिकारी तथा अल्लाह में मूलतः यह अन्तर कि राजा अपनी प्रजा की पूर्ण स्थिति को संस्तुति कर्ता के बताये बिना नहीं जानता तथा अल्लाह सर्वज्ञ है उसे इसकी आवश्यकता नहीं की कोई उसे जानकारी दे ।

संस्तुति (शिफारिस) की वास्तिविकता यह है कि अल्लाह सदाचारी जनों पर दया करते हुये उन्हें उनकि शिफारिस के कारण क्षमा कर देता है, जिनको सम्मानित करने हेतु उसने शिफारिस की अनुमति दी होती है ।

७- सातवां संदेह :-

सातवां सन्देह यह पेश किया जाता है भगतों एवं पुनीतों का अल्लाह के पास विशेष स्थान है इसलिये प्रेम एवं आदर के लिये उनसे सम्पर्क रखा जाये तथा उनके अवशेषों से प्रसाद प्राप्त किया जाये एवं उनके माध्यम तथा अधिकार द्वारा अल्लाह से विनय की जाये । इस संदेह का निवारण यह है, कि सभी मुसलमान अल्लाह को प्रिय हैं, यद्यपि अपने विश्वास एवं कर्म के अनुपात से उनकी मित्रता में अन्तर है, परन्तु किसी एक के विषय में निश्चित रूप से यह कहना कि वह अल्लाह का प्रिय है इसके लिये धर्मशास्त्र एवं ईशदूत के वचन से प्रमाण आवश्यक है, जिसकी प्रियता की गवाही धर्मशास्त्र एवं ईशदूत के वचन दें हम भी उसकी प्रियता के साक्षी हैं । किन्तु जिसकी गवाही यह दोनों न दें हम भी विश्वास पूर्वक उसके विषय में कुछ नहीं कह सकते, हां मुसलमान के लिये भलाई की आशा रखते हैं ।

जिन पुरुषों के विषय में धर्मशास्त्र एवं ईशदूत के वचन से यह स्पष्ट है कि वह अल्लाह के प्रिय हैं उनके सम्बन्ध में भी अत्योक्ति उनसे प्रसाद ग्रहण तथा उनके अधिकार के माध्यम से अल्लाह से प्रार्थना करना निषेध है । और यह सब बातें शिर्क (मिश्रण) तथा बिदआत (अर्थात धर्म में अपनी ओर से मिश्रण) हैं ।

हम सदाचारियों से प्रेम करते हैं तथा उनके सुकर्मों एवं सदाचारों में उनका अनुसरण करते हैं किन्तु उनके बारे में अतिश्योक्ति नहीं करते, न उनको उनके पद से ऊंचा करते हैं ।

शिर्क (मिश्रण) सदाचारियों के विषय में अतिश्योक्ति ही से आरंभ होता है । 'नूह' की जाति ने धर्माचारियों ही के प्रकरण में अतिश्योक्ति किया, तथा इसी ने उन्हें यहां तक पहुंचाया कि अल्लाह को छोड़कर उनकी पूजा करने लगे । इसी प्रकार मुसलमानों में धर्माचारियों के संदर्भ में अतिश्योक्ति के कारण पूजा में मिश्रण आरंभ हुआ ।

अल्लाह एवं उसके दूत ने अतिश्योक्ति से बचे रहने का निर्देश दिया है । अल्लाह ने कहा है,

'(हे ईश दूत !) कह दो, कि हे शास्त्र धारियो अपने धर्म में अतिश्योक्ति न करो ।' (कुर्आन- '५/७७)

तथा ईश दूत नराशंस का वचन है कि :-

मेरी प्रशंसा में ऐसे अति न करना जैसे मर्यम के पुत्र ईसा की प्रशंसा में इसाई सीमा को लांघ गये, वास्तव में मैं तो दास हूं, तुम मुझे मात्र अल्लाह का दास एवं दूत कहो। (बुखारी, फतहुल बारी ६/४७८)

तथा अल्लाह ने हमें यह आदेश दिया है,कि किसी वली (ईश भक्त) की मध्यस्थता के बिना हम मात्र अल्लाह से प्रार्थना करें और उसने हम से वायदा किया है कि हम तुम्हारी विनय सुनेंगे और निस्सन्देह वह अपना वचन नहीं तोड़ता । अल्लाह ने वचन दिया है कि :-

'तुम्हारे पालन हार ने कहा है कि मुझ से प्रार्थना करो मैं तुम्हारी याचना सुनूंगा ।' (कुर्आन, ४०/६०)

उसका यह वचन भी है, कि :-

'(हे नराशंस!) जब मेरे भक्त तुम से मेरे संबंध में प्रश्न करें, (तो बता दो) कि मैं निकट हूं, प्रार्थी की प्रार्थना को जब प्रार्थना करता हो तो सुनता हूं ।' (कु० २/१८६)

एक और आयत में उसका यह आदेश है कि :-

'अपने पालनहार को रोते हुये धीरे-धीरे पुकारो ।' (कु० ७/५५)

एक अन्य आयत में उसने कहा है कि :-

उसी (अल्लाह) को उसकी स्वच्छ भक्ति करके पुकारो, (कु० ४०/६५)

इसी प्रकार जिस आयत में भी प्रार्थना का आदेश है, उसमें यही है कि किसी को माध्यम बनाये बिना प्रार्थना करो, पुनीत एवं भगत जन तो उसी के विनीत तथा आश्रित सेवक हैं ।

अल्लाह ने कहा है, कि :-

'(जिनको यह पुकारते हैं) वह स्वयं अपने पालनहार की ओर साधन खोजते हैं कि कौन-कौन निकटतम है तथा उसकी दया की आशा रखते एवं उसके दण्ड से भयभीत रहते हैं ।' कु० १७/५७)

औफी ने कहा है कि इब्ने अब्बास ने इस आयत की व्याख्या करते हुये फरमाया है कि :-

मिश्रण वादी कहते थे कि हम देवता गण तथा 'ईसा' एवं 'उज़ैर' की पूजा करते हैं। इस पर अल्लाह ने कहा है कि :-

'अर्थात देवता जिनको तुम पूजते हो वह स्वयं अल्लाह से निकट होने के लिए प्रयास करते हैं, वह अल्लाह की दया पाने की आशा रखते तथा उसके दण्ड से भयभीत हैं, अतः जो इस स्थिति में हो उसके द्वारा अल्लाह से विनय नहीं की जा सकती।' (तफ्सीर इब्ने कसीर- ३/४६)

इस्लामी धर्माचार्य 'इब्ने तैमिया' ने कहा है कि यह आयत सबके लिये है तथा इसके अन्तर्गत वह सभी व्यक्ति आते हैं जिनका पूजित स्वयं अल्लाह का उपासक हो, वह देवता हो अथवा जिन या इन्सान, अतः इस आयत में हर उस व्यक्ति को संबोधित किया गया है जिसने अल्लाह के सिवाय किसी को पुकारा, तथा वह स्वयं अल्लाह के प्रेम का इच्छुक एवं अल्लाह से दया की आशा रखता हो और उसके प्रकोप से भयभीत हो।

इसका सारांश यह है कि जिसने किसी मरे हुये व्यक्ति से वह ईश दूत हो या भगत विनय की, चाहे वह उसकी विनय गुहार से हो अथवा किसी अन्य शब्द से यह आयत उस पर लागू होगी।

(संग्रह फतावा इब्ने तैमिया ११/५२९)

८- आठवां सन्देह :-

उनका एक सन्देह निम्नलिखित दो आयतों पर आधारित है, जिनका अनुवाद ये है,

(१) 'हे विश्वासियों उस (अल्लाह) की ओर माध्यम की खोजकरो।' (कु० ५/३५)

(२) 'यही अपने पालनहार को पुकारते तथा स्वयं अपने पोषक की ओर साधन की खोज करते हैं, कि कौन निकटतम है ?' (कु० १७/५७)

उन्होंने इन दो आयतों से यह समझा है कि उनके तथा अल्लाह के बीच भगतों एवं सदाचारियों तथा उनके अधिकारों एवं बड़ाई को माध्यम बनाना उचित तथा संवैधानिक है।

इस सन्देह का उत्तर यह है कि इन दोनों आयतों में साधन (माध्यम) से तात्पर्य वह नहीं है जिसे यह समझते हैं वरन इनसे प्रयोजन यह है कि सत्कर्मों द्वारा अल्लाह का प्रेम प्राप्त किया जाये।

यह साधन दो प्रकार के हैं, एक- वैध, तथा दूसरा- अवैध ।

(१) वैध साधन :-

वैधानिक साधन कई प्रकार के हैं । निम्नलिखित साधन इसी के अन्तर्गत आते हैं ।

१- अल्लाह के जाति नाम एवं गौणिक नामों को माध्यम बनाना, जैसे कि अल्लाह ने पवित्र कुर्आन में कहा है,

'और मात्र अल्लाह के शुभ नाम हैं अतः-उन्हीं के द्वारा उसे पुकारो ।' (कु० ७/१८०)

जैसे मुसलमान कहे कि

हे अल्लाह

अथवा, हे सर्वाधिक दयालु

हे, दयाशील

हे, उपकारी

हे, महामान्य

मैं आप से यह प्रार्थना करता हूं ।

२- अपनी निर्धनता एवं आवश्यकता का वर्णन करके अल्लाह से विनय करना जैसे- ईश दूत हजरत 'अय्यूब' ने कहा कि :-

'मुझे दुःख पहुंचा है और तू प्रम कृपालु है ।' (कु० २१/८३)

तथा जैसे ईश दूत 'ज़करिया' ने कहा,

'हे, मेरे पालन हार, मेरी अस्थियां दुर्बल हो गई हैं तथा मेरा सिर (बुढ़ापे के कारण) सफेद हो गया । हे मेरे पालनहार मैं तुझसे प्रार्थना करके कभी बिफल नहीं रहा ।'

(प० कु० १९/४)

तथा जिस प्रकार ईश दूत 'ज़ुन्नून' (युनुस) ने विनय की :-

'तेरे सिवाय कोइ उपासनीय नहीं । तू पवित्र है मैं ही दोषी हूं ।'

(कु० २१/८३)

३- शुभ कर्मों को साधन बनाना, जैसे कि पवित्र कुर्आन में है,

'हे हमारे पालनहार हम ने एक व्यक्ति को पुकारते सुना जो अल्लाह के प्रति विश्वास की घोषणा कर रहा था कि अपने पालनहार के प्रति विश्वास करो, तो हमने विश्वास कर लिया- हे हमारे पालनहार इस कारण तु हमारे पापों को क्षमाकर दे तथा हमसे हमारे पापों को मिटा दे ।

(कु० ३/१९३)

और जैसे उन तीन व्यक्तियों की व्यथा में आया है- कि गुफा के ऊपर पत्थर सरक आया तो उन्होंने अपने सत्कर्मों द्वारा अल्लाह से दुआ कि और अल्लाह ने उनसे संकट दूर कर दिया, तथा यही वह साधन है जिसकी चर्चा उपरोक्त दोनों आयतों में है जिससे संदेहकर्ताओं ने तर्क दिया है । यह साधन अपने शुभ कर्मों द्वारा अल्लाह से निकट होना है ।

४- जीवित सदाचारी लोगों की आशीर्वाद को माध्यम बनाना ।

इसका नियम यह है कि कोई किसी जीवित धर्माचारी के पास जाये तथा उससे कहे कि मेरे लिये अल्लाह से दुआ कर दीजिये । जैसे अन्तिम ईशदूत नराशंस ने अपने एक सहचर से कहा कि,

'मेरे छोटे भाई हमको अपनी दुआ में न भूलना' (अबूदाऊद- हदीस नं० १४९८ तथा तिर्मिज़ी हदीस नं० ३५५२) तथा जिस प्रकार ईश दूत के अनुयायी आपसे दुआ के लिये निवेदन करते थे एवं इसी प्रकार आपस में भी परस्पर दुआ के लिये निवेदन किया करते थे ।

(२) अवैध साधन :-

अवैध साधन यह है कि सृष्टि में से किसी के व्यक्तित्व अथवा अधिकार, प्रधानता एवं मर्यादा को माध्यम बनाकर अल्लाह से प्रार्थना करना जैसे कोई यह कहे कि फलां अथवा उसके अधिकार, मर्यादा के माध्यम से तुझ से प्रार्थना करता हूं और इस पर ध्यान न दे कि वह जीवित है अथवा मृत ।

इस प्रकार प्रार्थना निषेध तथा शिर्क के साधनों में है और यदि प्रार्थी जिसे माध्यम बना रहा है उसे प्रसन्न करने के लिये कोई पूजा करे तो यह महाशिर्क है (मैं इससे अल्लाह की शरण चाहता हू) जैसे किसी महन्त के लिये बलिदान करे अथवा उसकी समाधी के लिये मनौती माने, उसे पुकारे, उससे सहायता मांगे, तथा इसी प्रकार का कोई अन्य काम करे । हम अल्लाह से प्रार्थना करते हैं कि मुसलमानों को धर्म का विवेक प्रदान करें तथा शत्रुओं के प्रति उनकी सहायता करें एव उन्हें सत्य का दर्शन करायें ।

९- नवां सन्देह :-

उनके सन्देह का एक कारण महा ईश दूत के कुछ वचन हैं जिनको वह अपने लिये दलील समझते हैं। इनमें एक वचन वह है कि जिसे इमाम तिर्मिजी ने अपनी पुस्तक, 'जामे तिर्मिजी' में लिखा है कि:-

'उस्मान बिन हुनैफ' ने कहा, कि एक सूर ईश दूत के पास आया और आग्रह किया कि अल्लाह से प्रार्थना करें कि मुझे स्वस्थ कर दें। आपने कहा, कि यदि तुम चाहो तो तुम्हारे लिये प्रार्थना कर दूं, और यदि चाहो तो सहन करो तथा सहनशील रहना तुम्हारे लिये उत्तम है।

उसने आग्रह किया कि आप दुआकर दें, आपने उसे भली प्रकार वज़ू करने तथा कुछ शब्दों से दुआ करने आदेश दिया।

जिसका अनुवाद यह है :-

'हे अल्लाह। मैं तुझसे तेरे दूत, दया के दूत मुहम्मद के साथ प्रार्थना करता हूं तथा तेरी ओर ध्यान करता हूं, मैं अपनी इस आग्रह की पूर्ति के लिये उनके द्वारा अपने पालनहार की ओर ध्यान करता हूं। हे अल्लाह मेरे विषय में उनकी संस्तुति को स्वीकार कर ले।

इमाम तिर्मिज़ी ने कहा कि यह हदीस (वचन) हसन, सही, गरीब है हम इसको 'जाफर' के द्वारा जानते हैं तथा यह अबू जाफर खत्मी नहीं है। (सुनन तिर्मिज़ी प्रार्थना अध्याय, हदीस न० ३५७३)

उनका कहना है कि इस हदीस मे ईशदूत द्वारा अल्लाह की ओर ध्यान करना एवं प्रार्थना करना स्पष्ट है।

इसका उत्तर यह है कि यदि यह हदीस सही भी हो तो इससे तुम्हारी बात सिद्ध नहीं होती, इसलिये कि उस सूर ने ईश दूत से दुआ करने के लिये आग्रह किया कि मेरे लिये दुआकर दें, फिर आप की उपस्थिति में प्रार्थना के संग ध्यान किया, और ऐसा करना समुचित है, कि तुम किसी जीवित धर्मात्मा के पास जाओ तथा उससे आग्रह करो कि मेरे लिये अल्लाह से दुआ कर दो। इस हदीस से कदापि यह सिद्ध नहीं होता कि मृतक तथा अनुपस्थित को माध्यम बनाया जाये तथा उसके द्वारा अल्लाह में ध्यान स्थित किया जाये। ईश दूत ने भी उस सूर से यही कहा कि वह अल्लाह से दुआ करे कि उसके संबंध में अपने दूत की प्रशंसा स्वीकार कर ले।

संक्षेपतः- इस हदीस में मात्र अल्लाह की प्रशंसा की गई है तथा अल्लाह ही से

स्वास्थ्य प्रदान करने हेतु प्रार्थना की गई है । इससे अधिक और कुछ सिद्ध नहीं होता, इससे कदापि यह सिद्ध नहीं होता कि मृतक तथा अनुपस्थित व्यक्ति के माध्यम से अनुनय करना अथवा मृतकों तथा अनुपस्थितों को गुहारना विधिवत है ।

इसके सिवाय एक मिथ्या हदीस भी प्रस्तुत करते हैं कि :-

'ईश दूत ने कहा, कि मेरी महिमा एवं गरिमा को साधना बनाओ, मेरी महिमा तथा गरिमा का अल्लाह के पास बड़ा महत्व है ।

किन्तु जैसा कि इस्लामी धर्माचार्य इब्ने कैयिम ने लिखा है, मिथ्या है, इसमें ईश दूत पर आरोप लगाया गया है कि आपने यह कहा है । (फतावा संग्रह, इब्ने तैमियह १/३१९-३४६)

१०- दसवां संदेह :-

उनका एक भ्रम यह भी है कि वह कहानी तथा सपनों पर विश्वास करते हैं, जैसे यह कहते हैं कि फलां की समाधि पर गया तो यह-यह घटनाएं हुई, तथा फलां ने सपने में देखा । इसी प्रकार एक कहानी इस प्रकार कहते हैं कि -

मैं ईश दूत की समाधि के पास बैठा था कि एक गंवार आया तथा कहने लगा कि हे ईश दूत आप पर शांति हो, मैंने अल्लाह का यह वचन सुना है, जिस का अनुवाद है-

"और जब वह अपने ऊपर अत्याचार करके आपके पास आयें और अल्लाह से क्षमा याचना करें, तथा ईश दूत उनके लिये क्षमा याचना करें तो अल्लाह को क्षमाशील एवं दयालु पायेंगे ।" (कु०सू०, ३आ०३४)

अतः मैं आपके पास आपने पापों को क्षमा कराने तथा अपने पालनहार की ओर आपकी संस्तुती चाहने हेतु आया हूं, फिर वह गंवार यह कविता पढ़ने लगा, जिस का अनुवाद यह है

"हे उन में सर्वोत्तम जिन की अस्थियां इस भूमि में गड़ी हैं, तथा जिसकी अस्थियों के कारण यह भूमि तथा टीले सुगन्धित हो गये ।"

मेरा प्राण इस समाधि पर कुर्बान हो जाये, जिसमें आप उपस्थित हैं, इस समाधि में पवित्रता एवं करूणा है ।

गंवार यह कहकर चला गया, मेरी आंख लग गई, और मैंने ईशदूत को सपने में

देखा, आप फरमा रहे थे, हे अतबी! गंवार के पास जाओ तथा उसे यह शुभ समाचार सुना दो कि अल्लाह ने उसे क्षमा कर दिया है ।

इस संदेह का उत्तर यह है कि कथाओं तथा सपनों से आदेशों एवं आस्था की सिद्धि नहीं होती ।

इस आयत का तात्पर्य ईश दूत के जीवनकाल में आपके पास आना है, आप की समाधि पर आना नहीं ।

तथा इस की पुष्टि इससे होती है कि आपके सहचरों तथा उनके अनुयायियों ने आप की समाधि पर जाकर यह याचना कभी नहीं की कि, आप हमारे पापों के लिये क्षमायांचना करें, जबकि वह हितोपकार की प्राप्ति एवं धार्मिक आदेशों के पालन की अत्यंत लालसा रखते थे ।

११- ग्यारहवां सन्देह :-

उनका एक संदेह यह भी है कि कुछ समाधियों के पास उनकी आकांक्षाएं पूरी हो गयीं, जैसे वह कहते हैं एक व्यक्ति ने फलां की समाधि पर उपस्थित होकर अनुनय की अथवा 'वली' का नाम पुकारा तो उसकी मनोकामना पूरी हो गयी ।

इस संदेह का उत्तर यह है कि मिश्रणवादी की किसी कामना की पूर्ति से यह प्रमाणित नहीं होता कि वह जो मिश्रण कर रहा है वह भी वैध हो । यह सभव है कि उस स्थान पर उसकी कामना की पूर्ति अल्लाह की ओर से हो, तथा मिश्रण वादी यह समझ रहा हो कि ऐसा किसी 'पीर' अथवा भगत को पुकारने से हुआ है तथा यह भी संभव है कि उसकी किसी कामना की पूर्ति के लिये उसकी परीक्षा हो

संक्षेपतः - यथा समय किसी मुशरिक की आवश्यकता का पूरा हो जाना यह सिद्ध नहीं करता कि अल्लाह के सिवाय किसी अन्य से प्रार्थना करना उचित है । वास्तव में मिश्रण वादियों के पास अपने मिश्रण कार्यों की पुष्टि के लिये एक भी स्पष्ट प्रमाण नहीं है, इनकी स्थिति वही है जो अल्लाह ने पवित्र कुरआन में बताई है ।

"तथा जो अल्लाह के संग अन्य पूज्य को पुकारता है उसके पास कोई तर्क नहीं है (कु०२३/११७)

शिर्क (मिश्रण) का कोई आधार नहीं, जब कि तौहीद (एकेश्वर वाद) स्पष्ट प्रमाणों पर आधारित है ।

क्या अल्लाह में संदेह है जो आकाश एवं पृथ्वी का रचयिता है । (पवित्र कु० १४/१०)

"हे इंसानों, अपने उस पालनहार की पूजा करो, जिसने तुमको तथा तुमसे पूर्वजनों को पैदा किया, ताकि संयमी बन जाओ, जिसने भूमि को बिछावन तथा आकाश को छत बनाया, एवं आकाश से जल उतारा, फिर उससे अनेक प्रकार के फल तुम्हारे खाने के लिये उपजा दिये अतः अल्लाह का भागी न बनाओ (जब) तुम जानते हो ।" (कु० २/२२)

१२- बारहवां संदेह :-

अतिवादी महंतों तथा उनके अनुयायियों का विचार है कि-

"शिर्क (मिश्रण) माया मोह तथा उसमें लिप्त होने का नाम है ।"

इसका उत्तर यह है कि यह उनकी ओर से उस घोर शिर्क पर पर्दा डालने का प्रयास है जिसमें समाधियों की पूजा एवं विगत महापुरुषों के आदर के नाम पर वह स्वयं लिप्त हैं, अल्लाह ने उचित ढंग से दुन्या प्राप्त करने की अनुमति दी है, तथा यदि दुन्या अल्लाह के आदेशों का पालन करने पर सहायतार्थ कमाई जाये तो यह भी अल्लाह की अराधना एवं एकेश्वर वाद है ।

समाप्ति

शिर्क (मिश्रण) अत्याचारों में सबसे घोर पाप है ।

"निश्चय, शिर्क (मिश्रण) घोर अत्याचार है ।" (कु०सू० ३१/आ०१३)

जिसका अंत शिर्क पर हो अल्लाह उसे क्षमा नहीं करेगा, अल्लाह का वचन है -

"निःसंदेह अल्लाह इसे क्षमा नहीं करेगा, कि उसके साथ (शिर्क) किया जाये तथा इसके सिवाय जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा ।" (पवित्र कुरआन, ४/४८)

जो अल्लाह के साथ किसी अन्य की पूजा उपासना करता हो उसके लिये स्वर्ग सदा के लिये निषेध है ।

"निश्चय ही जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया, अल्लाह ने उस पर स्वर्ग निषेध कर दिया है तथा उसका स्थान नरक है ।" (कु० ५/७२)

मिश्रण वादी मलीन है, वह 'काबा' की मस्जिद में नहीं जा सकता -

"निःसंदेह, मुशरिक (मिश्रण वादी) अपवित्र है । वह इस वर्ष के बाद "मस्जिदे हराम' के निकट न आयें ।" (प०कु०, ९/२८)

मुशरिक का प्राण एवं धन का कोई सम्मान नहीं ।

"जब आदर के महीने व्यतीत हो जाये, तो मुशरिकों से लड़ो तथा उनको पकड़ो और घेरो ।" (कु०सू०-९/आ०५)

मिश्रण वादी प्रत्यक्ष रूप से सत्पथ से भटका हुआ है, तथा उसने मिश्रण कर के गंभीर आरोप लगाया है तथा तौहीद (एकेश्वर वाद) की ऊंचाई से बहुत दूर जा गिरा है -

"जो कोई अल्लाह के साथ शिर्क करता है, मानो वह आसमान से गिर गया, फिर पक्षी उसे उचक लें, अथवा प्रचंड वायु ने उसे कहीं दूर फेंक दिया ।" (कु०सू० २२/आ० ३१)

मुशरिक (जो कोई पूजा में अल्लाह के साथ मिश्रण करता हो) से विवाह वर्जित है -

"मुशरिक नारियों से विवाह न करो, जब तक एकेश्वर वाद में विश्वास न करें, तथा विश्वासी दासी मुशरिक नारी से उत्तम है, यद्यपि तुमको सुंदर लगती हो, तथा मुशरिकों से विवाह न करो, जब तक एकेश्वर वाद में विश्वास व्यक्त न करें, एवं विश्वासी दास मुशरिक से उत्तम है यद्यपि वह (मिश्रणवादी) तुमको अच्छा लगे ।" (प०कु०- २/२२१)

"तथा (हेनराशंस) तुमको तथा तुम से पूर्व (ईश दूतों) को आदेश किया जा चुका है कि यदि तुम शिर्क (मिश्रण) करोगे तो तुम्हारे कर्म व्यर्थ हो जायेंगे तथा तुम क्षतिग्रस्त में हो जाओगे ।" (कु०सू०३९आ०६५)

"और यदि वह शिर्क (मिश्रण) करते तो उनके सभी कर्म अकारथ हो जाते ।" (कु० ६/८८)

हम संदेह, शिर्क कृतघ्नता, दुविधा से अल्लाह की शरण चाहते हैं तथा उससे आग्रह करते हैं कि हमारे धन, परिवार, तथा कुल में ऐसी स्थिति उत्पन्न न हो जो दुखद हो ।'

हे अल्लाह हमें सत्य को सत्य समझने तथा उसके अनुसरण का सामर्थ्य प्रदान कर एवं हमें मिथ्या को मिथ्या समझने तथा उससे बचने की शक्ति दे ।

"तुम्हारा पालनहार सर्वशक्तिमान इन की बातों से पवित्र है, तथा शांति हो सभी ईश दूतों पर एवं सब प्रशंसा सर्वलोक के पालनहार के लिये है ।" (कु० ३७/१८०-१८२)

"वह (अल्लाह) इनके शिर्क से पवित्र एवं ऊंचा है ।" (१६/२)

"वह अल्लाह (परमेश्वर) इन बातों से पवित्र एवं अत्यंत ऊंचा है ।" (पवित्र कुरआन १७/४३)

और अल्लाह की दया हो हमारे ईश दूत मुहम्मद (नराशंस) पर तथा आपके परिवार एवं सभी सहचरों पर ।

डॉ0 सालेह फ़ौज़ान

المحتويـــات

المحتويـــــات

जब आप इस पुस्तक का अध्ययन कर
चुके हों तो दुसरों को अध्ययान के लिए
दिजिए, अथवा ऐसे स्थान पर रख दिजिए
कि आपके अतिरिक्त दुसरे भी इससे लाभ उठा सके

من إنجازات المكتب

قسم الجاليات

إسلام أكثر من ثلاثة آلاف شخص مابين رجل وامرأة

إقامة
١١ رحلة للحج
٢٧ رحلة للعمرة

تفطير أكثر من تسعة آلاف صائم في شهر رمضان.

إقامة ستة دروس مستمرة للجاليات بعدة لغات.

قسم الدعوة

طباعة العديد من الكتب والمطويات وتوزيع الأشرطة السمعية.

دعم المشاريع الدعوية والعلمية والتوعوية صلاحا للبلاد والعباد.

التنسيق المستمر للعلماء وطلبة العلم في المحاضرات والدورات العلمية والكلمات التوجيهية بشكل أسبوعي.

إقامة ١٣ درسا أسبوعيا في المساجد .

لطلب الكميات/ الإتصال بقسم الدعوة في المكتب

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالنسيم

الرياض - حي المنار - خلف مستشفى اليمامة

هاتف/ ٠١٢٣٥٠١٩٤ - ٠١٢٣٥٠١٩٥ فاكس/ ٠١٢٣٠١٤٦٥

رقم الحساب: ٣٤١٠٠٣٩٠٠/٤

مطبعة دار طيبة - الرياض - ت: ٤٢٨٣٨٤٠